REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

सल्तनत समय के मंदिर

डा.मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.

❊ सारांश :

सोलंकी समय में स्थापत्य के क्षेत्रमें सुवर्ण युग का निर्माण हुआ देखने को मिलता है। इस वंश के राजवीओ सोलंकी-वाघेला समय में 'स्थापत्य' के क्षेत्रमें सुवर्णयुग का निर्माण हुआ देखने को मिलता है। इस वंश के कला के उपासक थे। मैंने उत्तर गुजरात में शासन किये हुए शासको से बनवाया धार्मिक स्थापत्यों का परिचय किया है। उसने चावडा वंश के राजाओं ने सबसे ज्यादा राज्य करके अपने राज्य को फलाने का प्रयास किया था। उनके समय के स्थापत्यो हाल थोडे ही बचे है। समकालीन साहित्य में से उल्लेखित स्थापत्यो कालक्रम नष्ट हुआ है। मंदिर स्थापत्यो का उत्तम नमूना संडेर का निलकंठ महादेव का मंदिर इस समय का जान शके।

❊ वसइ :

वसइ (ता.विजापुर, जि.महेसाणा) का नीलकंठेश्वर मंदिर वहां के राणक पटेलने वि.संवत १५२५-शक वर्ष १३९० (इ.स.१४६८) में बधाया।

वि.संवत १५३५ (इ.स.१४७९) में चाणस्मा में शेठ रविचंदने भेटवा पार्श्वनाथ का मंदिर बंधाया।

❊ मोटीदाउ :

मोटीदाउ (जि.महेसाणा) में भवानीश्वर महादेव का मंदिर है। वह वि.संवत १५६५ (इ.स.१५०९) में बनवाया था। (उंझा, जि.महेसाणा) का कंथुनाथ मंदिर इ.स.१५४४ में बनवाया था। उसका भी असल स्वरुप रहा नहीं।

❊ पदुगाम :

वि.सं.१६२२ (इ.स.१५६५) में पदुगाम (ता.विसनगर, जि.महेसाणा) के सिद्धेश्वर महादेव का मंदिर का संस्करण हुआ था। उस वर्ष दहीसरा (जि.राजकोट) में जाम करणकी पत्नीने घीगडमल्ल का मंदिर बनवाया।

❊ सरोत्रा :

सरोत्रा (जि.बनासकांठा) मां 'बावनध्वज' नाम से जानेवाला पहचाना पूराना मंदिर है। मुख्य मंदिर १६.६×२७.४ मी. विस्तृत जगती पर आया है। मुख्य मंदिर का पीछला (दक्षिण) भाग, पूर्व बाजु का बडा भाग और नैऋत्य कोने कि शिल्पमंडित दिवालो का भाग

टूट गया है। शैली की नजर से मंदिर १३मी-१४मी सदी का मानने में आता है। मंदिर उत्तराभिमूख है। आबु की विमलवसही और कच्छ का भद्रेश्वर मंदिर का जैसे उत्तराभिमुख है। आबु की विमलवसही और कच्छ का भद्रेश्वर मंदिर के जैसा यह मंदिर का प्रांगण का अगला भाग, रंगमंडप की पाटो की भमती की पाटो साथ जोड कर छाधान्वित किया है। मंदिर गर्भगह गूढमंडप त्रिकमंडप रंगमंडप भमती देवकुलिकाओं और बलानक का बना हुआ है। त्रिकमंडप में यक्ष-यक्षिणी के लिए

गोख की रचना गूढमंडप अलग की रचना दिवालो में किया है। गर्भगृह और गूढमंडप की बाह्य दिवाल यक्ष-यक्षिणीओ नृत्यांगनाओ और वादको की आकृतिओ से विभूषित है।

❊ पोसीना :

पोसीना में नीलकंठ मंदिर में पीठ के सबसे नीचले घर से मंडोवर के सबसे उपरी स्तर तक सुंदर शिल्प कंडारा है। गर्भगृह मंडप और शृंगारचोकी पर के छावण पीछे के समय का समरावेला है। गर्भगृह की द्वारशाख पंचशखा प्रकार की है। शिल्पो और सुशोभनो की कोतरणी परसे यह १५ मी सदी का हो ऐसा लगता है।

❊ भेटाली :

भेटाली (जि.साबरकांठा) में बहोत अच्छे तरीके से जमाया हुआ शिव पंचायतन मंदिर है। यह मंदिरसमूह तीन मीटर उँची जगती पर बंधाया है। पछीत का भाग डुंगर की तलेटी के साथ जुडा है। मुख्य मंदिर शिव का है और यह गर्भगृह अंतराल मंडप और शृंगारचोकी का बना हुआ है। मंडप और चोकी पर के छावण बाद के काल के है। जबकी गर्भगृह परका रेखान्वित शिखर मंदिर के समय का है। पीठ और मंडलवर के थरो में देवदेवीओ दिकपालो और अप्सराओका विविध शिल्प आया हुआ है। मंडप की वेदिका परसे यह मंदिर १५मी सदी का हो ऐसा लगता है। कोने पर का मंदिर बहोत अलंकृत नहीं। इशान अग्नि नै ऋत्य और वायव्य का मंदिर गणेश स्कंद सूर्य और पार्वती का है। उसमें गणेश और पार्वती की मूर्ति मूल जगा पर पडी हुई है। पार्वती की मूर्ति की पाटली पर १५०७ (ई.स.१४५१) का लेख है।

❊ वसइ :

वसइ (ता.विजापुर, जि.महेसाणा) का 'अखाडा' या 'पालेश्वर महादेव' इस नाम से पहचाना जाता। पश्चिमाभिमुख मंदिर शिखरशैली का एक सुंदर नमूना है। मंदिर गर्भगृह अंतराल मंडप और शृंगारचोकी का बना हुआ है। मंडप में २० स्तंभ है। मंडोवर में सारी शिल्प-समृद्धि है, लेकिन चूने के लपेडे को लेकर उसका सौंदर्य ढक गया है। मंदिर की जगती में चार कोने चार छोटे-छोटे मंदिर होने से यह मंदिर पंचयातन प्रकार का है। द्वारशाखा के ओतरंग में वि.सं.१७०१ (ई.स.१६४४-४५) का लेख ह।

❊ इडर :

इडर के राव भाण के समय (१५मी सदी) में वडियावीर (जि.साबरकांठा) में बधाया हुआ बडा शिवालय हाल आधा गिर गया है। इसीलिये लोग उसकी इस साइड पर आया हुआ वीर के छोटे देरा को महत्व देते है। शिवालयो का अनेक बार जीर्णोध्धार होने के बावजूद उसमें पूराने अवशेष की हिफाजत हूई है। जो उसकी जाहोजलाली की झांखी कराते है। गर्भगृह की शिल्पसमृद्ध द्वारशाखा मोढेरा के मंदिर की द्वारशाखा के साथ बहोत साम्य है। उसके नव शंख है। मंडोवर में देवदेवीओ और नृत्यांगनाओ के तथा कामरत स्त्रीपुरुषो के सुंदर शिल्प है।

❊ वडनगर :

वडनगर (जि.महेसाणा) के हाटकेश्वर मंदिर नागरो का इष्टदेव हाटकेश्वर महादेव का मूल स्थानक मानने में आता है। यह गर्भगृह अंतराल सभामंडप और तीन शृंगारचोकीओ से विभूषित है। पूरा मंदिर शिल्पसमृद्ध है। मंडोवर पीढ और मंडप तथा शृंगारचोकीओकी वेदिकाओ पर नव ग्रहो, दिक्पालो और देवदेवीओकी मूर्तिओ तथा कृष्ण और पांडवो का कुछ जीवनप्रसंग अलंकृत हुआ है।

श्री ढांकी मानते है कि मूल मंदिर लतिन (अेकशृंगी) था और वह मूणराजने बनवाया, लेकिन मंदिर के तलमानमां के निर्गमो की रचनाने ठेक शीखर की टोच तक की उसकी रेखाओ इस मत को पुष्पि देता नहीं। मंदिर अनेक बार नवनिर्माण पामा हुआ है। लेकिन वह १५मी सदी के बादका है।

❊ पोलो :

साबरकांठा जिल्ला में पोलो नामक जंगल-विस्तार में अमूक जीर्ण प्राचीन मंदिर आये है। यह मंदिरो की शैली अनु-सोलंकी काल का प्रचलित स्थापत्य की लगभग अेकसरखी शैली है।

❊ आभापुर :

आभापुर (विजयनगर) में आया हुआ सारणेश्वर का मंदिर गर्भगृह अंतराव प्रदक्षिणापथ ग्रढ मंडप जैसे दो बाजु की दो शृंगारचोकीओ और सभामंडप का बना हुआ ह। मंदिर तीन मजले का है। मंदिर के आगे सुंदर तरीके से अलंकृत किया हुआ वेदी पर यज्ञकुंड की रचना है। मंडप और शृंगारचोकीओ का स्तंभ सोलंकीकालीन मंदिरो के स्तंभो से अलग दिखे ऐसा घाट है। उसके स्तंभदंड ठेक नीचे से उपले छेडे तक वृताकार है और बीच बीच में कणीदार वलयाकार रुपांकनो से विभूषित है। कुंभी तथा शिरावटी मं अधोमुखी पल्लवो का रुपांकन किया है। गर्भगृह मंडप और शृंगारचोकीओ पर के छावण नाश हुए है। मंदिर के प्रांगण में वि.सं.१५५४-शक सं.१४२० (ई.स.१४९८) को 'महाराजाधिराज श्री राव भाण' के राज्यकला का पालियो है।

❊ लाखेणा :

लाखेणा मंदिर जैन मंदिर है। वह गर्भगृह अंतराल गूढमंडप त्रिकमंडप सभामंडप शृंगारचोकीयाँ और बलानक का बनाया है। यह मंदिर दो मजले का है। त्रिकमंडप और सभामंडप जालीयों के साथ आच्छादित किया है। यह मंदिर की मूर्तियाँ हाल हिंमतनगर में स्थायी है।

यह मंदिर के नजदीक तीन छोटे मंदिर है वो शिव, लक्ष्मी-नारायण और शक्ति के है। पासमें 'सासु का मंदिर' और 'वहु का मंदिर' के नामे जाने जाते दो छोटे मंदिर है। लाखेणा मंदिर के थोडे अंतर पे हरणाव नदी के बंध के पास बडा 'सूर्य मंदिर' आया है। उसमें की सूर्यमूर्ति बडी है। दूसरी मूर्तियाँ के साथ वह मूर्ति भी लुप्त हो गई है।

यह मंदिर-समूह के आगे एक कीर्तितोरण है। पाटडा की नीचे तथा उपर की कमान नाश हो गई है। बाकी का भाग अच्छे तरीके से जलवाया है। स्तंभो की कुंभीयाँ तथा शिरावटीयाँ शिल्पसमृद्ध है। तोरण पर के पाटडा में देवदेवीओं के सुंदर गवाक्ष हे।

आभापुर के पास 'नव देरा' या 'सदीत-सांवणिंगा का देरा' नाम से जाना जाता मंदिरो का समूह आया है। उसमें से कितने मंदिर शिव, विष्णु, चामुंडा और भैरव के है। तो एक जैन देरासर भी है। दूसरे मंदिरो के मुख्य अंग भी नष्ट हो गये है। मंदिरो के मौजूद रहे भाग उनकी भव्य मांडणी तथा शिल्पसमृद्धि का ख्याल देते है। जैन मंदिर अच्छी स्थिति में है।

❊ संदर्भसूचि :

१. गौदाणी हरिलाल, ''गुजरात का भव्य भूतकाल'', पृ.१२१
२. अंताणी नरेश, पूर्वोक्त, 'कच्छमित्र', धरोहर
३. परीख रसिकलाल छो और शास्त्री हरिप्रसाद ग्रं., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-५, सल्तनतकाल, पहला संस्करण-१९७७, पृ.४२८
४. परीख रसिकलाल छो और शास्त्री हरिप्रसाद ग्रं., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-६, सल्तनतकाल, पहला संस्करण-१९७७, पृ.४२८

डा.मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.